विस्तार पत्रक-NRCC/2016/2

टोरडियों में ठीकरिया (स्किन कैंडीडियेसिस)

भा. कृ. अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर 334001
(राजस्थान)

ठीकरिया (स्किन कैंडीडियेसिस) एक वर्ष से कम उम्र वाले टोरडियों में तीव्रता से फैलने वाला संक्रामक फफूंदी त्वचा रोग है। चुंकि इस रोग में जख्म बाह्य त्वचा पर टूटे हुए मिट्टी के बर्तन की ठीकरी के आकार के लगते हैं इसलिए ऊष्ट्र पालक इसे अपनी भाषा में ठीकरिया कहते हैं। जब भी यह संक्रमण किसी टोले में होता है तो उस टोले के सभी नवजात टोरडियों में तीव्रता से फैल जाता है, जबकि इन्हीं नवजात टोरडियों के साथ रहती व दूध पिलाती मादा ऊंटनियों में संक्रमण नहीं होता। यह रोग राजस्थान के शुष्क व अर्धशुष्क दोनों क्षेत्रों में देखने को मिलता है। इस रोग में जख्म पहले पशु की थुई पर होते हैं। तत्पपश्चात् उदर के दोनों तरफ होते हुए पुरे शरीर पर फैल जाते हैं। जख्म पहले गोलाकर होते हैं तथा 1.0 से. मी. से भी कम माप के होते हैं। तत्पश्चात ये लगभग 10 से. मी. सेभी अधिक माप के हो जाते हैं व आपस में मिल जाते हैं। जख्म सख्त रेशेदार परत के साथ फुंसीदार व बाल रहित होते हैं। जख्मो को खुरचने पर काली–भूरी दुर्गन्ध भरी जड़ सहित बालों वाली खुर्चन निकलती है। कुछ समय पश्चात इन टोरडियों में बैचेनी व खुजलाहट होती है जिससे जख्म फट जाते है व इनसे खून निकलने लगता है। इससे टोरडियें कमजोर व दुर्बल हो जाते हैं। एक वर्ष की उम्र पर रोग ग्रसित व स्वस्थ टोरडियों के वजन बढोतरी का तुलनात्मक अध्यन्न करने पर, रोग ग्रसित टोरडियों के वजन बढोतरी लगभग 15 प्रतिशत कम पाई गई। जख्मो से त्वचा खुर्चन नमूनों की फफूंद संवर्धन परीक्षण में कैंडीडा ऐल्बिकान्स नामक फफूंद से इस रोग के होने का पता चला।

ठीकरिया के शुरुआती जख्म

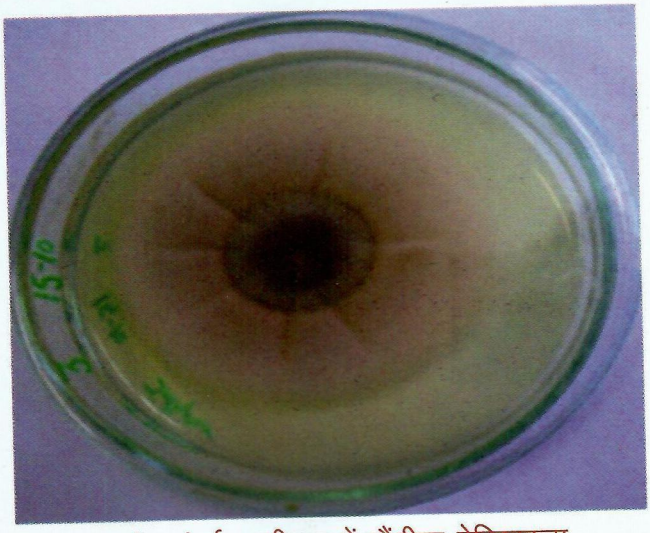

फफूंद संवर्धन परीक्षण में कैंडीडा ऐल्बिकान्स

सूक्ष्मदर्शी जाँच में कैंडीडा ऐल्बिकान्स

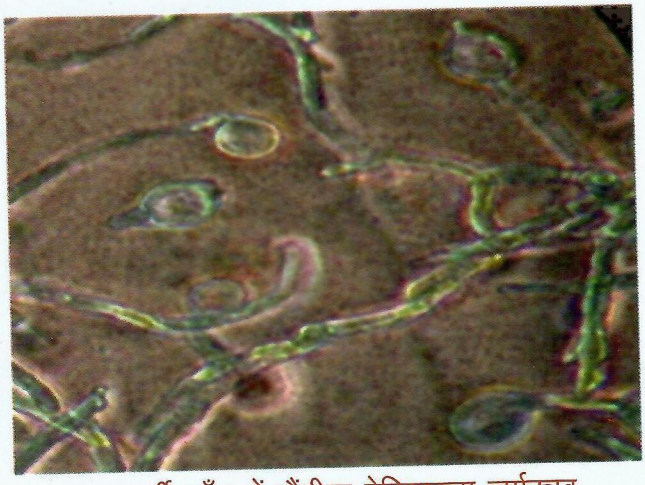

सूक्ष्मदर्शी जाँच में कैंडीडा ऐल्बिकान्स जर्मट्यूब

ठीकरिया का उपचार :-

उपचार शुरू करने से पहले पुरे शरीर के बाल काट दें। इससे दवा लगाना आसान रहेगा व मात्रा भी कम लगेगी। तत्पश्चात टोरडियों में ठीकरिया के जख्म की खुर्चन को अच्छी तरह से रगड़ कर साफ कर दें। टोरडियों में ठीकरिया के उपचार के लिए दवाइयों पर अध्ययन कर निम्न लिखित तीन दवाओं को उपचार के लिए सही पाया गया :

उपचार 1: साफ पानी में 2.0 प्रतिशत पोटाशियम आयोडाइड का घोल हर दूसरे दिन लगायें। ऐसा करने से ठीकरिया लगभग 20 दिन में ठीक हो जाता है।

उपचार 2: सरसों के तेल में 6.0 प्रतिशत गंधक का पाऊडर मिला कर हर दूसरे दिन लगायें। ऐसा करने से ठीकरिया लगभग 15 दिन में ठीक हो जाता है।

उपचार 3: जख्मो को 10 प्रतिशत सोडियम थायोसल्फेट के घोल से धो दें। तत्पश्चात सरसों के तेल में 6.0 प्रतिशत गंधक का पाऊडर व 3.0 प्रतिशत सेलिसिलिक एसिड मिला कर हर दूसरे दिन लगायें। ऐसा करने से ठीकरिया लगभग 14 दिन में ठीक हो जाता है।

टोरडियों में ठीकरिया के अधिक जख्म

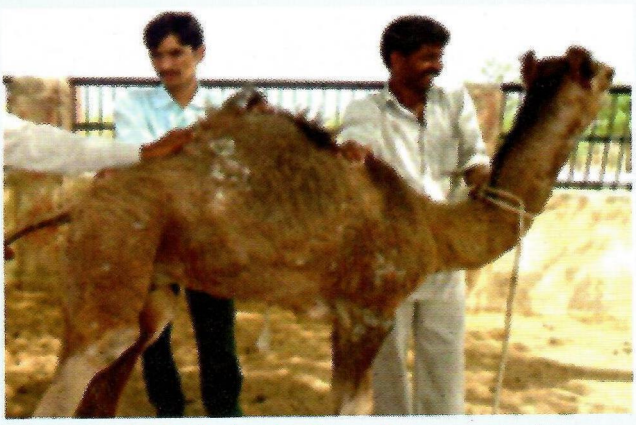

टोरडियों में ठीकरिया के कम जख्म

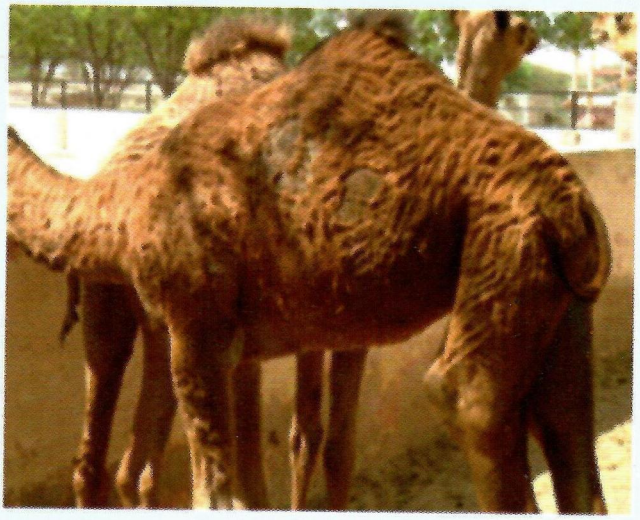

जख्म का खुर्चन साफ करने के बाद

पोटाशियम आयोडाइड लगाते हुए

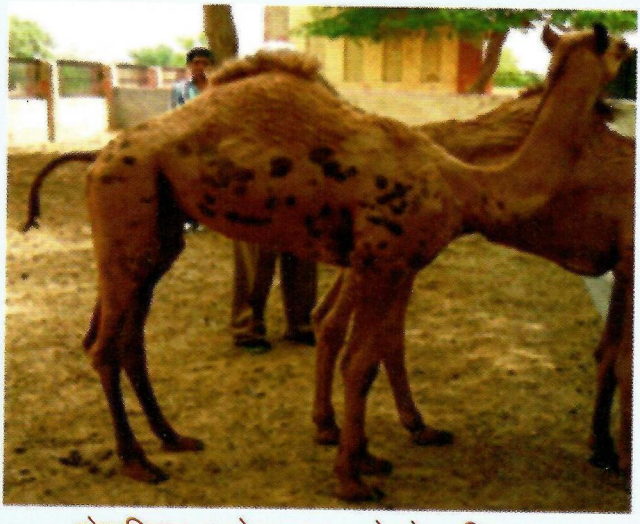

पोटाशियम आयोडाइड लगाने के 3 दिन बाद

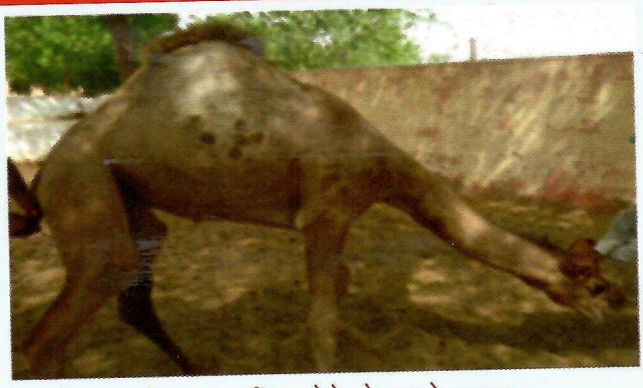

बिलकुल ठीक होने से पहले जख्म

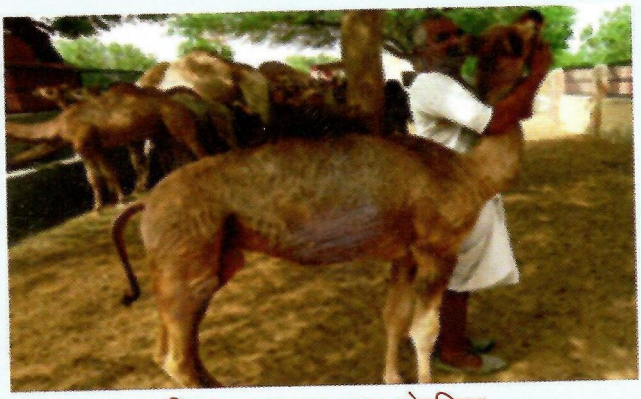

बिलकुल स्वस्थ हुआ टोरडिया

तीनो उपचारों में कोई अनचाही प्रक्रिया सामने नहीं आई। प्रत्येक उपचार में लगभग 250 रु. प्रति टोरडिया खर्च हुआ। कुछ टोरडियों में ठीकरिया कुछ समय पश्चात खुद ही ठीक हो जाता है । फिर भी उपचार में देरी न करें, देरी करने से जख्म तो बढेगें ही इसके अलावा ठीकरिया अन्य स्वस्थ टोरडियों में भी फैलेगा। उपचार से पहले उतारी गयी खुर्चन को गहरे गड्डे में दफना दें या जला दें । ठीकरिया के जख्म कम हो या ज्यादा, दवा को पुरे शरीर पर लगायें।

–: प्रकाशक :–

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

–: लेखक :–

एफ.सी. टूटेजा, काशी नाथ, राकेश रंजन,
राजेश कुमार सावल एवं एन.वी. पाटिल

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड., शिवबाड़ी, बीकानेर 334001 (राजस्थान)

दूरभाष : 0151–2230183, फैक्स : 0151–2231213

मुद्रक :- स्कूल प्रिंट एण्ड ग्राफिक्स, जस्सूसर गेट, बीकानेर - 9982333378